The Eternal Epic of Divine Mother

दुर्गा सप्तशती

DURGA SAPTASHATI

Chapter 13 : The Boons of Devi to Suratha and the Vaishya

तेरहवाँ अध्याय: सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान

Sin Destroyed
राज्य पुनर्प्राप्ति

Prosperity
समृद्धि - धन-धान्य और पुत्र

Fearless
भयमुक्ति

Moksha
मोक्ष

Savarnika Manu
सावर्णिक मनु

Knowledge
ज्ञान

Attachment Dissolved
ममता का क्षय

Freedom
मुक्ति

Cosmic Order
ब्रह्मांडीय क्रम

Wisdom
विवेक

Singularity
एकत्व

Teeratha Dwitya - Completion of Saptashati
तेरहावाँ अध्याय - सप्तशती की पूर्णाहुति

Durga Saptashati

|| 'त्रयोदश अध्याय' ||

—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

तेरहवाँ अध्याय: सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान

ऋषि ने राजा सुरथ से देवी के उत्तम माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा कि देवी ही इस जगत् को धारण करती हैं और विद्या उत्पन्न करती हैं। वे ही भगवान विष्णु की मायास्वरूपा हैं, जिनके द्वारा सभी मोहित होते हैं। उन्होंने राजा को परमेश्वरी की शरण में जाने को कहा, क्योंकि वे ही आराधना करने पर भोग, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करती हैं।

मार्कण्डेय जी बताते हैं कि मेधा मुनि के वचन सुनकर राजा सुरथ और वैश्य, जो ममता और राज्यापहरण से खिन्न थे, तपस्या के लिए निकल पड़े। उन्होंने जगदम्बा के दर्शन के लिए नदी के तट पर मिट्टी की मूर्ति बनाकर पुष्प, धूप, हवन और अपने रक्त की बलि से लगातार तीन वर्षों तक संयमपूर्वक आराधना की।

इससे प्रसन्न होकर चण्डिका देवी ने प्रत्यक्ष दर्शन दिए और उनसे वरदान माँगने को कहा।

राजा सुरथ ने अगले जन्म में अविनाशी राज्य तथा इस जन्म में शत्रुओं को हराकर पुनः अपना राज्य प्राप्त करने का वरदान माँगा। वैश्य, जो संसार से विरक्त थे, उन्होंने ममता और अहंता (अहंकार) का नाश करने वाला ज्ञान माँगा।

देवी ने राजा को थोड़े ही दिनों में अपना राज्य वापस मिलने का वरदान दिया और कहा कि मृत्यु के बाद वे सूर्य के अंश से जन्म लेकर इस पृथ्वी पर 'सावर्णिक मनु' के नाम से विख्यात होंगे। वैश्य को भी मोक्ष के लिए ज्ञान प्राप्त होने का वरदान दिया।

इस प्रकार दोनों को मनोवांछित वरदान देकर और उनकी स्तुति सुनकर देवी अम्बिका अन्तर्धान हो गईं।

Durga Saptashati
|| 'त्रयोदश अध्याय' ||

Chapter 13:

सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान

॥ ध्यान ॥

जो उदय काल के सूर्यमण्डलकी-सी कान्ति धारण करने वाली हैं, जिनके चार भुजाएँ और तीन नेत्र हैं तथा जो अपने हाथों में पाश, अङ्कुश, वर एवं अभयकी मुद्रा धारण किये रहती हैं, उन शिवा देवीका मैं ध्यान करता (करती) हूँ।

ऋषि कहते हैं -॥ राजन्! इस प्रकार मैंने तुमसे देवी के उत्तम माहात्म्यका वर्णन किया। जो इस जगत् को धारण करती हैं, उन देवी का ऐसा ही प्रभाव है॥

वे ही विद्या (ज्ञान) उत्पन्न करती हैं। भगवान् विष्णु की मायास्वरूपा उन भगवती के द्वारा ही तुम, ये वैश्य तथा अन्यान्य विवेकी जन मोहित होते हैं, मोहित हुए हैं तथा आगे भी मोहित होंगे। महाराज! तुम उन्हीं परमेश्वरी की शरण में जाओ॥ आराधना करने पर वे ही मनुष्यों को भोग, स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करती हैं॥

मार्कण्डेय जी कहते हैं -॥ क्रौष्टुकिजी! मेधामुनि के ये वचन सुनकर राजा सुरथ ने उत्तम व्रत का पालन करने वाले उन महाभाग महर्षि को प्रणाम किया। वे अत्यन्त ममता और राज्यापहरण से बहुत खिन्न हो चुके थे॥

महामुने! इसलिये विरक्त होकर वे राजा तथा वैश्य तत्काल तपस्या को चले गये और वे जगदम्बा के दर्शनके लिये नदी के तटपर रहकर तपस्या करने लगे॥

वे वैश्य उत्तम देवी सूक्तका जप करते हुए तपस्या में प्रवृत्त हुए। वे दोनों नदी के तटपर देवी की मिट्टी की मूर्ति बनाकर पुष्प, धूप और हवन आदि के द्वारा उनकी आराधना करने लगे। उन्होंने पहले तो आहार को धीरे-धीरे कम किया; फिर बिलकुल निराहार रहकर देवी में ही मन लगा ये एकाग्रतापूर्वक उनका चिन्तन आरम्भ किया॥

वे दोनों अपने शरीर के रक्त से प्रोक्षित बलि देते हुए लगातार तीन वर्षतक संयमपूर्वक आराधना करते रहे॥

इस पर प्रसन्न होकर जगत् को धारण करने वाली चण्डिका देवी ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर कहा॥

देवी बोलीं -॥ राजन्! तथा अपने कुल को आनन्दित करने वाले वैश्य! तुम लोग जिस वस्तु की अभिलाषा रखते हो, वह मुझसे माँगो। मैं संतुष्ट हूँ, अतः तुम्हें वह सब कुछ दूँगी॥

मार्कण्डेयजी कहते हैं -॥ तब राजा ने दूसरे जन्म में नष्ट न होने वाला राज्य माँगा तथा इस जन्म में भी शत्रुओं की सेना को बलपूर्वक नष्ट करके पुनः अपना राज्य प्राप्त कर लेने का वरदान माँगा॥

वैश्य का चित्त संसार की ओर से खिन्न एवं विरक्त हो चुका था और वे बड़े बुद्धिमान् थे; अतः उस समय उन्होंने तो ममता और अहंता रूप आसक्तिका नाश करनेवाला ज्ञान माँगा॥

देवी बोलीं -॥ राजन्! तुम थोड़े ही दिनों में शत्रुओंको मारकर अपना राज्य प्राप्त कर लोगे। अब वहाँ तुम्हारा राज्य स्थिर रहेगा॥

फिर मृत्युके पश्चात् तुम भगवान् विवस्वान् - (सूर्य) के अंशसे जन्म लेकर इस पृथ्वीपर सावर्णिक मनु के नाम से विख्यात हो ओगे॥

वैश्यवर्य! तुमने भी जिस वर को मुझसे प्राप्त करने की इच्छा की है, उसे देती हूँ। तुम्हें मोक्ष के लिये ज्ञान प्राप्त होगा॥

मार्कण्डेयजी कहते हैं -॥ इस प्रकार उन दोनों को मनोवाञ्छित वरदान देकर तथा उनके द्वारा भक्तिपूर्वक अपनी स्तुति सुनकर देवी अम्बिका तत्काल अन्तर्धान हो गयीं। इस तरह देवी से वरदान पाकर क्षत्रियों में श्रेष्ठ सुरथ सूर्यसे जन्म ले सावर्णि नामक मनु होंगे॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में 'सुरथ और वैश्य को वरदान' नामक तेरहवाँ अध्याय पूरा हुआ ॥

Durga Saptashati

|| 'Thirteenth Chapter' ||

Chapter 13:

The Goddess's Boon to Suratha and the Vaishya

॥ **Dhyana (Meditation)** ॥

I meditate upon Goddess Shiva, who possesses the radiance of the rising sun's orb, who has four arms and three eyes, and who holds the noose, the goad, the boon, and the posture of fearlessness in Her hands.

The Rishi said -॥ O King! Thus have I described to you the excellent greatness of the Goddess. Such is the influence of that Goddess who sustains this universe.

It is She who generates knowledge. By the power of that Goddess, who is the form of Lord Vishnu's Maya, you, this Vaishya, and other discerning persons are deluded, have been deluded, and will be deluded in the future. O Great King! Take refuge in that Supreme Goddess. When worshipped, She bestows upon humans enjoyment, heaven, and liberation.

Markandeya said -॥ O Kraustuki! Hearing these words of the Sage Medha, King Suratha, who was greatly distressed by extreme attachment and the seizure of his kingdom, bowed to that highly blessed great sage who observed excellent vows.

O Great Sage! Therefore, becoming dispassionate, the King and the Vaishya immediately went for penance and began to perform austerities on the riverbank to obtain a vision of the Mother of the

Universe.

The Vaishya began his penance, continuously chanting the excellent Devi Suktam. Both of them made a clay image of the Goddess on the riverbank and worshipped Her with flowers, incense, fire offerings (Havan), and other rituals. Initially, they gradually reduced their diet, and then, completely abstaining from food, they focused their minds solely on the Goddess and began their concentrated contemplation.

They both performed worship with self-control continuously for three years, offering Bali (sacrificial offerings) sprinkled with their own body's blood.

Pleased by this, Goddess Chandika, the sustainer of the universe, appeared before them and spoke.

The Goddess said -॥ O King! And O Vaishya, the joy of your lineage! Ask Me for whatever object you desire. I am pleased; therefore, I shall give you everything.

Markandeya said -॥ Then the King asked for an imperishable kingdom in the next birth, and also the boon to forcefully destroy the enemy's army and regain his kingdom in this life.

The Vaishya's mind was troubled and dispassionate towards the world, and he was very wise; therefore, at that time, he asked for the knowledge that destroys the attachment of 'mine' and 'I' (Mamatā and Ahaṃtā).

The Goddess said -॥ O King! In a few days, you shall slay your enemies and regain your kingdom. Your kingdom there shall remain stable.

Furthermore, after death, you shall take birth as an amsha (part) of Lord Vivaswan (the Sun) and will be renowned on this earth by the name of Savarni Manu.

O Best of Vaishyas! The boon that you, too, desired to obtain from

Me, I grant it. You shall attain knowledge for liberation (Moksha).

Markandeya said -॥ After granting both of them their desired boons and hearing their devotional praises, Goddess Ambika immediately disappeared. In this manner, Suratha, the best of Kshatriyas, having received the boon from the Goddess, will be born from the Sun and become the Manu named Savarni.

Thus, in the Shri Markandeya Purana, in the section of Devi Mahatmya which is part of the narrative of the Savarnika Manvantara, the Thirteenth Chapter titled 'The Boon to Suratha and the Vaishya' is completed.

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator

- Numerology Kundali Matching Tool